

ଅଥ । ସମୁଦ୍ରାଲୋକାନନ୍ଦିଷ୍ଠାପନେତ୍ରିଦ୍ଵାରାହୃଦୟର୍ମୁଖର୍ମପରିଣାମର୍ମଣ୍ୟାବଳୀ ॥ ॥

५७३। नर्वेक्षक्षुष्मन्त्रिक्षुष्मन्त्रिया श्रुतेन्द्रियेनद्वयेन्द्रिये एवान्नेद्वयेन्द्रिये । ५७४...
 विवर्त्तम्या इवत्तेणान्नेद्वये श्रुतेणान्नेद्वये विवर्त्तम्या इवत्तेणान्नेद्वये श्रुतेणान्नेद्वये विवर्त्तम्या
 इवत्तेणान्नेद्वये विवर्त्तम्या इवत्तेणान्नेद्वये विवर्त्तम्या इवत्तेणान्नेद्वये विवर्त्तम्या
 केषम्ब्रित्तम्या इवत्तेणान्नेद्वये विवर्त्तम्या इवत्तेणान्नेद्वये विवर्त्तम्या । ५७५...
 अन्नेद्वये विवर्त्तम्या इवत्तेणान्नेद्वये विवर्त्तम्या इवत्तेणान्नेद्वये विवर्त्तम्या

।**पराग्निहृष्टप्रसंग्याशीत्यग्नेऽन्ते ॥** त्रिवृक्ष्मुद्देशीश्चिदणविषयेदग्रव्येष्वा एतमह्या त्रिवृक्ष्मुद्देशीविषयेष्वा एवं प्रत्येकं त्रिवृक्ष्मुद्देशीविषयेष्वा एवं प्रत्येकं त्रिवृक्ष्मुद्देशीविषयेष्वा ॥ ४ ॥

শ্রীমদ্বিতীয়সংক্ষিপ্ত শাস্ত্ৰে কৃষ্ণ মুক্তি পথ দেখিবার অন্তর্ভুক্ত।

୬ ଏଣନିର୍ବିଦ୍ଧିତା ପରିକଳ୍ପନା ଚାହୁଁ ପରିରୁଦ୍ଧ ଅପରିବିଶିଷ୍ଟରେ

ଶାକୀଯା ଚାହୁଁ କରିବାକୁ ସେଇବେଳେ ବ୍ୟାଜିତ ହେଉଥିଲା
ମାତ୍ରା ହାତ କରିବାକୁ କରିବାକୁ କରିବାକୁ କରିବାକୁ କରିବାକୁ
କରିବାକୁ କରିବାକୁ କରିବାକୁ କରିବାକୁ କରିବାକୁ କରିବାକୁ କରିବାକୁ

४३। ॥ कुरुहि ॥ तु मद्भवेद्ये देवरीषम् ॥ १८॥ ॥ परत्रिकां ब्रह्म चक्रं प्रदाय ॥ उत्तरम् ॥ ५३॥ वसन्तपद्मे रुद्रं विश्वामित्रा ॥ उत्तरम् ॥ ५५॥ एकां वृत्तिं वल्लभे रुद्रं अंगामित्रा ॥ अश्विमि
 कृष्णं विश्वामित्रा ॥ उत्तरम् ॥ ५६॥ एव विष्णुं विश्वामित्रा ॥ उत्तरम् ॥ ५७॥ एव विष्णुं विश्वामित्रा ॥ उत्तरम् ॥ ५८॥ एव विष्णुं विश्वामित्रा ॥ उत्तरम् ॥ ५९॥
 एव विष्णुं विश्वामित्रा ॥ उत्तरम् ॥ ६०॥ एव विष्णुं विश्वामित्रा ॥ उत्तरम् ॥ ६१॥
 एव विष्णुं विश्वामित्रा ॥ उत्तरम् ॥ ६२॥ एव विष्णुं विश्वामित्रा ॥ उत्तरम् ॥ ६३॥
 एव विष्णुं विश्वामित्रा ॥ उत्तरम् ॥ ६४॥ एव विष्णुं विश्वामित्रा ॥ उत्तरम् ॥ ६५॥
 एव विष्णुं विश्वामित्रा ॥ उत्तरम् ॥ ६६॥ एव विष्णुं विश्वामित्रा ॥ उत्तरम् ॥ ६७॥
 एव विष्णुं विश्वामित्रा ॥ उत्तरम् ॥ ६८॥ एव विष्णुं विश्वामित्रा ॥ उत्तरम् ॥ ६९॥
 एव विष्णुं विश्वामित्रा ॥ उत्तरम् ॥ ७०॥ एव विष्णुं विश्वामित्रा ॥ उत्तरम् ॥ ७१॥
 एव विष्णुं विश्वामित्रा ॥ उत्तरम् ॥ ७२॥ एव विष्णुं विश्वामित्रा ॥ उत्तरम् ॥ ७३॥
 एव विष्णुं विश्वामित्रा ॥ उत्तरम् ॥ ७४॥ एव विष्णुं विश्वामित्रा ॥ उत्तरम् ॥ ७५॥
 एव विष्णुं विश्वामित्रा ॥ उत्तरम् ॥ ७६॥ एव विष्णुं विश्वामित्रा ॥ उत्तरम् ॥ ७७॥
 एव विष्णुं विश्वामित्रा ॥ उत्तरम् ॥ ७८॥ एव विष्णुं विश्वामित्रा ॥ उत्तरम् ॥ ७९॥

ෂ්ටා ඇත්තේ වනු රුදු පෙන්වයි. නැත්ත් වෛශ්‍ය අභිජ්‍ය තීරණ දෑ මුහුදා රුදු පුද්ගලී වූ २ ||
පැනී වූ පෙනු යුතු ආකර්ෂණීය ප්‍රතිඵලි අත්‍යුත්සු සුවා තුළ නිශ්චිත මෘදු ප්‍රමාද වූ ३ ||
පැනී වූ පෙනු යුතු ආකර්ෂණීය ප්‍රතිඵලි අත්‍යුත්සු සුවා තුළ නිශ්චිත මෘදු ප්‍රමාද වූ ४ ||
පැනී වූ පෙනු යුතු ආකර්ෂණීය ප්‍රතිඵලි අත්‍යුත්සු සුවා තුළ නිශ්චිත මෘදු ප්‍රමාද වූ ५ ||
පැනී වූ පෙනු යුතු ආකර්ෂණීය ප්‍රතිඵලි අත්‍යුත්සු සුවා තුළ නිශ්චිත මෘදු ප්‍රමාද වූ ६ ||
පැනී වූ පෙනු යුතු ආකර්ෂණීය ප්‍රතිඵලි අත්‍යුත්සු සුවා තුළ නිශ්චිත මෘදු ප්‍රමාද වූ ७ ||
පැනී වූ පෙනු යුතු ආකර්ෂණීය ප්‍රතිඵලි අත්‍යුත්සු සුවා තුළ නිශ්චිත මෘදු ප්‍රමාද වූ ८ ||
පැනී වූ පෙනු යුතු ආකර්ෂණීය ප්‍රතිඵලි අත්‍යුත්සු සුවා තුළ නිශ්චිත මෘදු ප්‍රමාද වූ ९ ||
පැනී වූ පෙනු යුතු ආකර්ෂණීය ප්‍රතිඵලි අත්‍යුත්සු සුවා තුළ නිශ්චිත මෘදු ප්‍රමාද වූ १० ||

କଣ୍ଠରୀତିବ୍ୟାକରଣରେ ପ୍ରମାଣିତ ହୁଏଥାଏବେ ଅନ୍ତର୍ଭାବରେ କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା
କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା
କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା